अध्याय 5

पं. विष्णु नारायण भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति

संगीत अनादि है, शाश्वत है और सनातन है। संगीत की अजस्त्र धारा युग–युगान्तर से प्रवाहित होती रही है। मानव कंठ से निःसृत न जाने कितने सुमधुर स्वरों का गायन प्रकृति में गुंजायमान होता रहा होगा ? अकल्पनीय है। आदि मानव ने अपने हृदयगत उद्‌गारों की अभिव्यक्ति के लिये अवश्य ही गीत और संगीत के स्वरों को माध्यम बनाया होगा। क्योंकि संगीत तो सभ्यता के प्रथम चरण में ही आदि मानव का सहचर बनकर उसके प्राणों को स्पन्दित करता रहा, किन्तु उस संगीत का स्वभाव कैसा था ? निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है। शनैः शनैः काल चक्र की मंथर गति से युग बदले, युगों का स्वरूप बदला और इसी के साथ गीत और संगीत भी परिष्कृति को प्राप्त होता गया। अनेकों संगीत साधक अपनी साधना के मंथन से निकाले गये नवनीत द्वारा जनमानस को आनंद पुष्टि प्रदान करते रहे। किन्तु तकनीकी साधनों के उस अभावग्रस्त समय में संगीत की वह अनमोल धरोहर काल के गर्त में समा गयी। उनकी संगीत साधना को चिरस्थायित्व प्रदान करने हेतु लेखन प्रणाली एवं मुद्रण सम्बन्धी सुविधा उस युग में नहीं थी। वह युग वैज्ञानिक उपकरणों के अभावों का दौर था जहाँ वर्तमान युग की तरह टेप, रिकॉर्ड जैसी विद्युत प्रणाली विकसित नहीं थी।

हिन्दुस्तानी संगीत के मध्ययुग में संगीत के घरानों का अभ्युदय भी हो चुका था। घरानों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत वांङ्मय में अनेक दैदीप्यमान मूर्धन्य कलाकार प्रदान किये किन्तु राजनैतिक एवं सामाजिक उठापटक के उस दौर में संगीत से सामान्य जनता भयग्रस्त होकर दूर होने लगी। संगीत वर्ग विशेष की धरोहर बन कर रह गया। कुलीन वर्ग में संगीत सीखना तो दूर संगीत सुनना भी प्रतिबंधित हो गया था। घरानों की संकीर्ण मानसिकता के चलते उस्तादों द्वारा अपनी साधना से तराशी गयी बंदिशों को छुपाकर रखा जाने लगा। फलतः संगीत की अमूल्य बंदिशों का ख़जाना विलुप्त प्रायः होने लगा। ऐसे संकट के दौर में पं. भातखण्डे जी ने अपने अथक परिश्रम से पुराने घरानेदार उस्तादों की बंदिशों को लिपिबद्ध कर सुरक्षित किया। उनके इस महान कार्य ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की अनमोल धरोहर को सदा के लिये अमर कर दिया। ''क्रमिक पुस्तक मालिका'' नामक पुस्तक पं. भातखण्डे की संगृहीत स्वरलिपियों का महाकोष है।

स्वरलिपि क्या है ?

संगीत के स्वर, ताल, मात्रा, विभाग, गीत के शब्द आदि को अंकित करने की प्रणाली को ''स्वरलिपि'' या ''नोटेशन सिस्टम'' कहते हैं। स्वरलिपि के द्वारा किसी भी देश के गीत और संगीत की बंदिश (कम्पोजिशन) के स्वरूप को वर्षों तक अक्षुण्ण रखा जा सकता है। जिस प्रकार वाणी अथवा भाषा को सुरक्षित रखने के लिये या उसे व्यक्त करने के लिये चिन्ह और संकेतों का आश्रय लेना पडा तथा इन्हीं चिन्ह संकेतों को उस भाषा की ''लिपि'' कहा गया ठीक उसी प्रकार संगीत के स्वर, ताल, लय और शब्द को अंकित करने की प्रणाली ''स्वरलिपि'' होती है। किस समय कौनसा राग एवं गीत प्रकार कैसे गाये जाते थे ? उसके स्वरूप से आनेवाली पीढ़ियों को परिचित कराने का सशक्त माध्यम स्वरलिपि है। स्वरलिपि बंदिश रूपी ताले की वह कुंजी है जिसके द्वारा राग विशेष में सृजित बंदिश के स्वर स्वरूप की परतें खोली जा सकती है और बंदिश के शब्दों में निहित स्वरों की आत्मा से रूबरू हुआ जा सकता है।

स्वरलिपि पद्धति का विकास

संगीत एक क्रियात्मक कला है जो गुरूमुख से सुनकर ही आत्मसात् की जाती है। लेखन प्रणाली एवं मुद्रण प्रणाली सम्बन्धी सुविधा नहीं होने से प्राचीन स्वरलिपि पद्धति अधिक विकसित नहीं थी।

वैदिक काल में उदात्त स्वर को ''3'', अनुदात्त स्वर को ''क'' तथा स्वरित को ''र'' द्वारा व्यक्त किया जाता था । साथ ही कहीं–कहीं इन्हीं स्वरों के लिये क्रमशः 1, 2, 3 अंकों का भी प्रयोग हुआ है। सामगान में स्वरित को ''2र'' चिन्ह से प्रदर्शित किया गया है।

भरतकाल के नाट्यशास्त्र में भी स्वरांकन एवं मात्रांकन सम्बन्धी सामग्री मिलती है। नाट्यशास्त्र में मंद्र स्वरों के लिये स्वरों के ऊपर बिंदी तथा तार स्वरों के लिये ऊपर खड़ी रेखा, मध्य सप्तक चिन्ह रहित दिखाया गया है। भरतकालीन वीणा वादन की स्वरांकन पद्धति में वीणा के बोल '' धातु '' को प्रयोग करने के चिन्हों का उल्लेख मिलता है। भरत के नाट्य शास्त्र में पाटाक्षर के संकेत चिन्ह भी दिये गये हैं।

मंतग मुनि – के वृहद्देशी ग्रंथ के अलंकार प्रकरण में अलंकारों का और जाति प्रकरण में जाति के प्रस्तारों का अंकन मिलता है। बृहद्देशी ग्रंथ में स्वरों के ''ह्रस्व'' अथवा ''लघु'' रूप को अकारांत या इकारांत लिखा गया है। यथा – '' सा गा मा पा धा '' लिखा गया है।

शारंग देव – के संगीत रत्नाकर ग्रंथ में प्रबन्धाध्याय में छंद का अंकन और उसी आधार पर ताल का अंकन किया गया है। – यथा –

लघु – ल।

गुरू – ग ऽ

प्लुत – प ऽ

वर्णिक छंदों में 'गण'' और उसके मात्रा संकेत इस प्रकार हैं –

य – गण ।ऽऽ

म – गण ऽऽऽ

त – गण ऽऽ।

सोमनाथ – के ग्रन्थ ''राग विबोध'' में 23 गमकों के चिन्ह बताये गये हैं जो वीणा के हैं। सोमनाथ की स्वरांकन पद्धति में स्वरों का संकेताक्षर अंको में दिया गया है जैसे – 1, 2, 3, 4,

आधुनिक काल – केग्रन्थकारों में पं. विष्णुनारायण भातखण्डे, वी. डी. पलुस्कर, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, रविन्द्रनाथ ठाकुर, मौला बख्श एवं भृगुलाल मुंशी ने स्वरांकन पद्धति तैयार की किन्तु हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में सुगमता की दृष्टि से सर्वाधिक लोक प्रचलित स्वरलिपि पद्धति पं. भातखण्डे जी की रही। हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के समकक्ष ही कर्नाटक स्वरलिपि पद्धति और पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति भी विकसित होती रही जिनमें वहाँ का संगीत सुरक्षित है। पं. विष्णुनारायण भातखण्डे की स्वरलिपि पद्धति के चिन्ह इस प्रकार हैं –

1. जिन स्वरों के नीचे ऊपर कोई चिन्ह नहीं होता, उन्हें ''शुद्ध स्वर '' मानते हैं। जैसे – सा, रे , ग, म,
2. जिन स्वरों के नीचे आड़ी रेखा हो उन्हें ''कोमल स्वर'' कहते हैं । जैसे –रे, ग, ध, नि
3. तीव्र मध्यम के ऊपर खड़ी लकीर खींची जाती है । जैसे –मं
4. मन्द्र सप्तक के स्वरों के नीचे बिन्दु लगाते हैं। जैसे – नि़, ध़, प़
5. तार सप्तक के स्वरों के ऊपर बिन्दु लगाते हैं। जैसे – सां, रें, गं, मं, पं
6. बिना बिन्दी वाले स्वर मध्य सप्तक के समझने चाहिये। जैसे – सा, रे, ग, म, प
7. गाने के शब्द को बढ़ाकर गाने के लिये अवग्रह चिन्ह (ऽ) लगाया जाता है – रा ऽ ऽ म
8. स्वर को बढ़ा कर गाने के लिये (–) आड़ी लकीर का प्रयोग होता है – सा –– रे –– ग –– म
9. कई स्वरों को एक मात्रा में गाने या बजाने के लिये ‿ चिन्ह का प्रयोग होता है – पगध मपधनी
10. मींड के लिये ⁀ चिन्ह का प्रयोग होता है – रे–प ग
11. कण स्वर को प्रायः बंदिश के स्वर विशेष के ऊपर लिखा जाता है –$\overset{म}{रे}$ अर्थात ''म'' को छूते हुए ''रे'' स्वर को गाना या बजाना ।
12. जो स्वर कोष्ठक में बंद हो उसे इस प्रकार गाना चाहिये – (प) = धपमप ।
13. ताल में सम दिखाने के लिये × चिन्ह होता है।
14. खाली के लिये 0 चिन्ह होता है।
15. सम को पहली ताली मानकर क्रमशः ×, 2, 3, 4, ... अन्य तालियों की संख्याएँ लगाते हैं।
16. नीचे दो बिन्दी वाले स्वर अति मन्द्र सप्तक के होते हैं – सा॒
17. अति तार सप्तक के लिये स्वर के ऊपर दो बिन्दी लगाते हैं – सां
18. वाद्य में स्वरों को आंदोलित करने की क्रिया 'जमजमा' को इस प्रकार व्यक्त किया जाता है। ∿∿∿

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- संगीत की बंदिशों के स्वरूप को (स्वर, ताल, मात्रा, विभाग, शब्द) लेखन प्रणाली के संकेतों द्वारा लिपिबद्ध करना ही ''स्वरलिपि'' है।
- स्वरलिपि के द्वारा किसी भी देश के संगीत को चिरस्थायित्व प्रदान किया जा सकता है।
- रविन्द्रनाथ ठाकुर ने ''आकार मात्रिक'' स्वरलिपि पद्धति का आविष्कार किया था।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. कोमल स्वरों के लिये भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में कौनसा चिन्ह है ?
2. तीव्र मध्यम को बताने के लिये किस संकेत का प्रयोग किया जाता है ?
3. मन्द्र एवं तार सप्तक के स्वरों को किस प्रकार दर्शाया जाता है ?
4. ताल के सम और खाली को दिखाने के लिये किस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. स्वरलिपि पद्धति क्या है ? उसके महत्त्व को बताते हुए पं. भातखंडे की स्वरलिपि की विस्तृत व्याख्या कीजिये।